.....

मेवाड़ भूमि के आदिदेव जय एकलिंग त्रिपुरारी की।
जय गौरी उमा भवानी की जय जय पिनाक धनुधारी की।।

.....

आदिदेव भगवान श्री सूर्यनारायण की अखण्ड वंश परम्परा के 232 वें कुलदीपक एवं मेवाड़ के 76 वें उत्तराधिकारी **श्रीजी हुजूर अरविन्द सिंह जी मेवाड़** के बहुआयामी व्यक्तित्व को कलमबद्ध करना प्रत्यक्षतः उतना ही असंभव है जितना कि जगत–संचालक सूर्य देव के प्रकाश को मुट्ठी में बन्द करना। श्रीजी हुजूर प्राचीन विरासत, कला, संस्कृति व साहित्य के संवाहक तो है ही वह सामाजिक, धार्मिक व परोपकारी कार्यो के पुरोधा भी है। उनका संपूर्ण जीवन–वृत्त कालान्तर से चली आ रही मेवाड़ की गौरवशाली परम्पराओं को आमजन के बीच मौलिक रूप से संजीवित रखने को ही समर्पित है।

विश्व के प्राचीनतम राजवंश की यशस्वी परम्पराओं के सक्षमतम संवाहक का उदात्त जीवन चरित्र इतने विविध आयामों को अपने भीतर समेटे हुए है कि उन्हें वरीयताक्रम में ढाल कर सार्थक रूप से उनका वर्णन कर पाना वाणीपुत्रों के लिए भी अत्यन्त दुरूह है। अपने जीवन के छह दशक पूर्ण कर सातवें दशक में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में श्रीजी हुजूर के महान व्यक्तित्व का अत्यन्त ही संक्षिप्त विवरण कतिपय पंक्तियों में लिपिबद्ध करने का प्रयास किया गया है। हालांकि ऐसे महान व्यक्तित्व के छह–दशकों का यह विवरण–आलेख सूर्य को दीपक दिखाने जैसा

दुस्साहस ही है, किन्तु षष्टि–पूर्ति के इस ऐतिहासिक एवं पावन अवसर पर यह दुस्साहस निश्चय ही क्षमा के योग्य है।

1. वंश परम्परा :

मेवाड़ के गौरवशाली राजवंश की जड़े भगवान सूर्यनारायण से जुड़ी हुई हैं इसीलिये यहाँ के महाराणा ''सूर्यवंशी'' कहलाते हैं। इसी सूर्यवंश में गुहिलोत शासकों की सिसोदिया शाखा से सम्बद्ध बापा रावल (आठवीं सदी.) ने अपने गुरू महर्षि हारीत राशि के आशीर्वाद से मेवाड़ राज्य की स्थापना की जिसके अधिपति परमेश्वराजी महाराज श्री एकलिंगनाथ जी हैं और राणा उनके ''दीवान'' के रूप में कार्य करते हैं।

आये हारीत–महर्षि भी बलिदानी केसरिया पहने।
उत्सर्गी, त्याग, तपोबल से धरती का भार वहन करने।।
प्रगटा मेवाड़ी वंश मुकुट समिधा की यज्ञ हुताशन से।
स्वामी सर्वेश्वर एकलिंग बापा रावल दीवान बने।।

सिसोदिया वंश विश्व इतिहास में अपने दस प्रमुख लक्षणों के कारण विशिष्ट स्थान रखता है :–

'' देव श्री एकलिंगो, हारीत ऋषिगुरूर्बाणमाताकुलाम्बा,
पर्वाणित्रीणिसूत्रे यजुरितिनिगमो मेदपाटेश्वरत्वं ।
बप्पोमूलनरेशो द्विजसुरभिदया वैजवापायगौत्रम्,
चित्रोद्रिर्मूलभूमिर्दशभिरितिगुणैर्भातिशीशोदवंशं ।। ''

(अर्थात् सीसोदिया वंश अपने इन दस पहचान चिन्हों से जाना जाता है– 1. इस वंश के देवता श्री एकलिंगनाथ जी हैं, 2. कुलदेवी बाणमाता है, 3. ये तीन गांठों

वाली यज्ञोपवीत धारण करते हैं, 4. इनका वेद यजुर्वेद है, 5. ये मेदपाट (मेवाड़) के अधीश्वर हैं, 6. इनके मूल नरेश बापा रावल हैं, 7–8 ये गौ–ब्राह्मणों के प्रतिपालक हैं, 9. इनका गौत्र वैजवापायन है और 10. इनकी मूल भूमि चित्तौड़गढ़ है।)

इसी महान वंश परम्परा में बुधवार, दिनांक 13 दिसम्बर 1944 तद्नुसार सम्वत 2001 का पौष कृष्णा त्रयोदशी को श्रीजी हुजूर अरविन्द सिंह जी मेवाड़ का जन्म हुआ। जी.सी.एस.आई. एवं के.सी.आई.ई. जैसी कई विशिष्ट उपाधियों से अलंकृत एवं स्वतंत्र भारत में एकीकृत राजस्थान के प्रथम एवं अंतिम महाराज प्रमुख हिज लेट हाईनेस महाराणा सर श्री भूपाल सिंह जी मेवाड़ ऑफ उदयपुर आपके यशस्वी दादा थे तथा भारतीय संविधान द्वारा मेवाड़ के अंतिम महाराणा के रूप में प्रतिष्ठित हिज लेट हाईनेस महाराणा भगवत सिंह जी मेवाड़ उदयपुर आपके गौरवशाली पिताश्री। आपकी माताश्री हर लेट हाईनेस महारानी सुशीला कुमारी जी, बीकानेर के जनरल हिज लेट हाईनेस महाराजा सर श्री गंगा सिंह जी बहादुर ऑफ बीकानेर (जी.सी.एस.आई., जी.सी.आई.ई., जी.सी.वी.ओ., जी.बी.ई., के.सी.बी, ए.डी.सी., के.आई.एच., एल.एल.डी) की सुपौत्री एवं हिज लेट हाईनेस महाराजा सर श्री सार्दुल सिंह जी बहादुर ऑफ बीकानेर (जी.सी.एस.आई., के.सी.आई.ई., सी.वी. ओ.) की सुपुत्री थीं।

2. बाल्यकाल एवं शिक्षा–दीक्षा :–

श्रीजी हुजूर की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही माता–पिता की देख–रेख में विशेष रूप से नियुक्त किये गये शिक्षक द्वारा संपन्न हुई। बाद में उच्च शिक्षा के लिये आपको वर्ष 1956–57 में मेयो कॉलेज, अजमेर भेजा गया जहाँ से आपने दी कैम्ब्रिज

युनिवर्सिटी द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण कर स्कूल सर्टिफिकेट प्राप्त किया। तदनन्तर उदयपुर के महाराणा भूपाल महाविद्यालय से आपने अंग्रेजी साहित्य, अर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विषयों के साथ स्नातक उपाधि अर्जित की।

तदुपरान्त अपनी व्यावसायिक कार्यकुशलता को बढ़ाने के लिए आपने इंग्लैण्ड के 'द मेट्रोपॉलिटन कॉलेज', सेंट एलबन्स से होटल प्रबंधन का पाठ्यक्रम पूर्ण किया। बाद में आपने होटल प्रबंधन से लेकर प्रशासनिक स्तर की दक्षताओं को विकसित करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में विशेष पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों के अनुरूप श्रेष्ठतम होटल संचालन में विशेषज्ञता अर्जित की। अमेरिका से लौट कर आपने अपनी समस्त दक्षताएं शिकारबाड़ी होटल को विकसित करने में लगाई।

लगभग तीस वर्ष की आयु में श्रीजी हुजूर का विवाह स्वर्गीय महाराजकुमार फतेह सिंह जी ऑफ कच्छ (भुज) की सुपुत्री एवं स्वर्गीय महाराव विजयराजजी ऑफ कच्छ (भुज) की सुपौत्री राजकुमारी विजयराज कुमारी जी के साथ सम्पन्न हुआ। आपके तीन संतान हैं, जिनमें दो बाईजीलाल क्रमशः भार्गवी कुमारी जी मेवाड़ (1976) एवं पद्मजा कुमारी जी मेवाड़ (1980) हैं तथा तीसरे नंबर पर बावजीराज लक्ष्यराज सिंह जी मेवाड़ हैं जिनका जन्म 1985 में हुआ।

बड़े बाईजीलाल भार्गवी कुमारी जी मेवाड़ का विवाह कोटड़ी के ठाकुर साहब लोकेन्द्र सिंह जी के साथ हुआ है, इनके एक सुपुत्री (भाणेज बाईसा) लोकव्या कुमारी जी व भूविज्ञा कुमारी जी है। बाईसा भार्गवी कुमारी जी मेवाड़ जयपुर में निवास कर एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स का विपणन, प्रबंधन संभाल रही है। छोटे

बाईजीलाल साहिबा पद्मजा कुमारी जी मेवाड़ ने अमेरिका से अपनी शिक्षा समाप्त कर एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स में बतौर संयुक्त प्रबंध निदेशक कार्य कर कंपनी को एक नया आयाम दिया। हाल ही में 8 मार्च 2011 को इनका विवाह संतरामपुर (गुजरात) के राजकुमार साहिब डॉ. कुश सिंह जी परमार के साथ संपन्न हुआ। वे बॉस्टन में निवासरत है। श्रीजी हूजूर की तीसरी संतान महाराज कुमार साहब लक्ष्यराज सिंह जी मेवाड़ आस्ट्रेलिया से अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त कर पिता के साथ अपने व्यवसायिक एवं गैर–व्यवसायिक उपक्रमों में बतौर कार्यकारी निदेशक सेवाएं दे रहे हैं।

3. विरासत संरक्षण :–

नवम्बर 1984 में महाराणा भगवत सिंहजी मेवाड़ ऑफ उदयपुर के असामयिक निधन के उपरान्त श्रीजी हुजूर अरविन्द सिंहजी मेवाड़ के मजबूत कंधों पर मेवाड़ की 1500 वर्ष पुरानी विरासत के संरक्षण–संचालन का महत्वपूर्ण दायित्व आन पड़ा।

अपने पूज्य पिताश्री द्वारा सौंपी गई महत्वपूर्ण विरासत को श्रीजी हुजूर प्राण–प्रण से न केवल निभा रहे हैं, वरन् प्राप्त धरोहर का संवर्द्धन करते हुए इसे दिन दूनी–रात चौगुनी ख्याति भी दिलवा रहे हैं। विषम परिस्थितियों में विरासत का भार स्वीकार करने वाले श्रीजी हुजूर ने अदम्य साहस, उत्कट जिजीविषा और दृढ़–संकल्प का सहारा लेते हुए अपनी दूरदृष्टि, कर्त्तव्य के प्रति समर्पण, नेतृत्व क्षमता, प्रबंधकीय कौशल और निष्ठावान कार्यकर्ताओं के समूह के बल पर न केवल चुनौतियों का सामना किया वरन् विरासत संरक्षण के क्षेत्र में ऐसे कीर्तिमान

स्थापित किए कि आलोचकों के मुंह बन्द हो गए और प्रशंसकों के पास उनके वर्णन के लिए शब्दों की कमी हो गई।

अरविन्द ने ज़मीर का सौदा नहीं किया।
मेवाड़ के सम्मान को झुकने नहीं दिया।।
अवरोध लाख थे मगर इस कर्मवीर ने।
ये सूर्य वंशी रश्मि रथ रुकने नहीं दिया।।

श्रीजी हुजूर के लिए विरासत मात्र एक शब्द नहीं है जिसकी अत्यन्त ही संक्षिप्त एवं संकीर्ण व्याख्या शब्द–कोशों में की गई है। श्रीजी हुजूर के लिए विरासत का अर्थ है – उनके पुरखों द्वारा विगत 1500 वर्षों में इतिहास, कला, साहित्य, संस्कृति, धर्म, शिल्प वैभव, जीवनमूल्य आदि विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित उत्कृष्टता के आयाम ! इन आयामों को अपने सच्चे अर्थों में जीवित रखना और इन्हें नई ऊँचाईयाँ प्रदान करना ही श्रीजी हुजूर के जीवन का लक्ष्य रहा है।

इतिहास साक्षी है, श्रीजी हुजूर ने विगत दो दशकों में अपने पुरखों की विरासत को जो ऊँचाईयाँ प्रदान की हैं, वे अद्वितीय हैं। अप्रतिम शिल्प कला के बेजोड़ नमूनों के रूप में ऐतिहासिक महल और अन्य भवन हों, या संगीत, कला, साहित्य और धार्मिक–सांस्कृतिक आयोजन हों, श्रीजी हुजूर ने प्रत्येक पक्ष पर पूरा–पूरा ध्यान दे कर इन्हें नव्य–भव्य स्वरूप प्रदान कर भावी पीढ़ी के लिए इन्हें अक्षुण्णता के शिखर पर पहुंचाया है। श्रीजी हुजूर का प्रयत्न यही है कि वे एक जीवन्त विरासत (लिविंग–हेरिटेज) के प्रणेता बनें, जो वर्तमान पीढ़ी को प्रश्रय और जीवन दे तथा भावी पीढ़ी को गौरवपूर्ण मार्गदर्शन।

वचन की आन पर हिम–खण्ड सा अब कौन गलता है।
अँधेरी रात में दीपक सरीखा कौन जलता है।।
फक़्त मेवाड़ का अरविन्द ही अपवाद है वरना।
बुजुर्गों के बताये रास्ते पर कौन चलता है।।

4. धर्म एवं आस्थाः–

श्रीजी हुजूर एक धर्म प्रेमी, आस्तिक, आस्थावादी एवं हिन्दू मान्यताओं के प्रबल अनुयायी हैं। मेवाड़ अधिपति परमेश्वराजी महाराज श्री एकलिंगनाथ जी के अनन्य उपासक होने के साथ ही श्रीजी हुजूर सर्वधर्म समभाव के प्रबल पक्षधर हैं।

परमेश्वराजी महाराज श्री एकलिंगनाथ जी के दीवान के रूप में श्रीजी हुजूर ने मानव धर्म को सदैव सर्वोच्च वरीयता दी है और यही कारण है कि आज भी सभी प्रकार की विषम परिस्थितियों के बावजूद दान–पुण्य, सदावर्त, धार्मिक यज्ञानुष्ठान, श्राद्ध–संवत्सर आदि समस्त गतिविधियां पूर्ण विधान के अनुसार संचालित की जा रही हैं।

यह श्रीजी हुजूर के धार्मिक आस्था का ही प्रतिफल है कि श्री एकलिंगजी ट्रस्ट द्वारा प्रबंधित छोटे–बड़े लगभग 125 मंदिरों में प्रतिदिन न केवल पूर्ण विधि–विधानपूर्वक सेवा–पूजा–भोग की गतिविधियाँ संचालित हैं, वरन् इनके भौतिक विकास की दिशा में भी उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। मंदिरों का जीर्णोद्धार, मरम्मत, सौन्दर्यवृद्धि, सुरक्षा आदि प्रत्येक दृष्टि से श्री एकलिंगजी मंदिर परिसर, मंदिर श्री आसावरा माताजी, मंदिर श्री अम्बामाताजी, मंदिर श्री हस्तीमाताजी, मंदिर श्री देवराजेश्वरजी, मंदिर श्री राजराजेश्वरजी, मंदिर श्री रामेश्वर महादेवजी, मंदिर

श्री रामेश्वर हनुमानजी, मंदिर श्री बाणनाथजी आदि सभी प्रमुख मंदिरों की श्रेष्ठ व्यवस्था श्रीजी हुजूर की धर्म–परायणता की ही प्रतीक है। यही नहीं, बारहों माह पड़ने वाले विविध पर्व–उत्सवों एवं श्राद्ध–संवत्सरी के अवसर पर वैदिक विधान के अनुरूप पूजा–पाठ–यज्ञादि करने के लिए प्राचीनकाल से अस्तित्व में रही धर्मसभा आज भी अपने मूल स्वरूप में विद्यमान है।

अपने कुलदेवता भगवान श्री सूर्यनारायण के प्रति अगाध श्रद्धा एवं अपने पुरखों की विरासत के संरक्षण की उदात्त भावना के ही कारण आपने राज्य सरकार द्वारा उपेक्षित पड़े अति प्रसिद्ध श्री सूर्यनारायण मंदिर राणकपुर के रख–रखाव एवं वहां की सेवा–पूजा एवं सौन्दर्यीकरण का जिम्मा अपने कंधों पर लिया और आज वहां लाखों रूपये खर्च कर उस मंदिर की खोई प्रतिष्ठा और वैभव को पुनर्जीवित करने का प्रकल्प शुरू किया है।

परमपिता परमेश्वराजी महाराज श्री एकलिंगनाथ जी के प्रति उनकी अगाध आस्था इसी बात से प्रकट होती है कि प्रत्येक सोमवार को बिना चूके श्रीजी हुजूर कैलाशपुरी पधार कर अपने ईष्टदेव की आराधना करते हैं और समस्त सृष्टि के कल्याण के लिए प्रार्थना करते हैं। मानव धर्म के प्रबल पक्षधर श्रीजी हुजूर किसी का दिल नहीं दुखा सकते। किसी को भी परेशानी या विपत्ति में देख कर उनका क्षत्रियोचित हृदय हाहाकार कर उठता है और जब तक यथासंभव उसकी विपत्ति को दूर न कर दें, श्रीजी हुजूर के दिल को शांति नहीं मिलती। मंदिरों में दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं के लिए परिसर में विविध सुविधाएं उपलब्ध कराने की

बात हो या वहां कार्यरत लोगों की सुविधा का प्रश्न, श्रीजी हुजूर स्वयं इनका अवलोकन कर अपने मन के अनुरूप व्यवस्थाएं करवाते हैं।

5. संगीत – कला एवं संस्कृति संरक्षण :–

श्रीजी हुजूर बचपन से ही संगीत, कला एवं साहित्य के अनुरागी रहे हैं। शास्त्रीय संगीत के प्रति आपकी गहरी रूचि होने के कारण इसकी आपको अत्यधिक गहराई तक समझ भी है। विद्यार्थीकाल में आप स्वयं एक श्रेष्ठ सितारवादक रहे हैं। देश के किसी भी ख्यातनाम संगीतज्ञ का नाम लें, श्रीजी हुजूर उनके गायन–वादन की बारीकियों का विशद वर्णन करने में सक्षम हैं। आपके संग्रह में देश के सभी ख्यातिप्राप्त कलाकारों के संगीत के रिर्कार्ड, टेप व सी.डी उपलब्ध हैं जो विगत वर्षों में आपने महाराणा कुम्भा संगीत कला ट्रस्ट को दान कर दिए हैं। प्राचीन भारतीय शास्त्रीय संगीत को संरक्षण प्रदान करने वाला यह ट्रस्ट श्रीजी हुजूर के कुशल नेतृत्व में अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में जुटा हुआ है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति अत्यधिक लगाव के कारण प्रतिवर्ष आप सिटी पैलेस में कार्तिक पूर्णिमा एवं अन्य अवसरों पर ख्याति प्राप्त कलाकारों को विशेष तौर पर आमन्त्रित कर बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन करवाते हैं।

संगीत प्रेमी एवं कला मर्मज्ञ श्रीजी हुजूर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं इससे जुड़े विभिन्न पक्षों का, न केवल गहराई से अध्ययन किया, वरन् घण्टों बैठकर उनका रियाज भी किया। आपको संगीत विरासत में मिला। पूर्व महाराणा स्वर्गीय भोपाल सिंह जी एवं स्वर्गीय भगवतसिंह जी मेवाड़ ऑफ उदयपुर के दरबार में प्रतिदिन होने वाले संगीत कार्यक्रमों में घण्टों आपकी उपस्थिति ने आपको सहज

रूप से संगीत की ओर आकर्षित किया। यह आपके संगीत प्रेम का ही परिणाम है कि आपकी देख–रेख में भारतीय परम्परागत नृत्यों, गायन व संगीत की विभिन्न विधाओं पर शोध कार्य हो रहे हैं।

आपने गुरू पूर्णिमा के अवसर पर कैलाशपुरी स्थित परमेश्वराजी महाराज के मंदिर में भारतीय शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम **''स्वरांजलि''** का श्री गणेश किया। दो ही वर्षों में यह आयोजन इतना लोकप्रिय हो गया कि देश के ख्यातनाम संगीतकार यहां अपनी स्वरांजलि देने को लालायित रहते हैं।

कला मर्मज्ञ श्रीजी हुजूर की कला, चित्रकला, आदि में भी गहरी रुचि है। सिटी पैलेस में आपने मेवाड़ स्कूल ऑफ पेटिंग की शैली के पुराने दुर्लभ चित्रों को संरक्षण प्रदान करते हुए प्रदर्शित किया है। संगीत एवं कला के साथ ही साहित्य में भी श्रीजी हुजूर की अत्यधिक रुचि है। दुनियाभर का श्रेष्ठ साहित्य श्रीजी हुजूर ने पढ़ा है। अच्छी पुस्तकों का संग्रह बचपन से ही श्रीजी हुजूर का प्रिय शौक रहा है। महाराणा मेवाड़ विशिष्ट पुस्तकालय में श्रीजी हुजूर के निजी संग्रह से प्राप्त पुस्तकें इस बात का जीवन्त प्रमाण हैं। महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट के माध्यम से प्रतिवर्ष मेवाड़ के इतिहास, संस्कृति, साहित्य आदि से सम्बद्ध एवं विषय वस्तु की दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं उपयोगी ऐसे श्रेष्ठ साहित्य का प्रकाशन किया जाता है एवं प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान कराया जाता है जिन्हें अन्य प्रकाशक व्यावसायिक कारणों के चलते प्रकाशित करने में रुचि नहीं लेते हैं।

6. कविता एवं साहित्य के महान् संरक्षक :

बहुमुखी प्रज्ञा के धनी श्री मेवाड़ काव्य कला के अनन्य पारखी है। रससिद्ध कवियों की संगोष्ठियों में उन्हें रात–रातभर काव्यानंद की अनुभूति करते देखा जा सकता है। मेवाड़ के उत्सर्गी शौर्य एवं बलिदान को रुपाइत करती महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर के प्रवक्ता पं. नरेन्द्र मिश्र की कालजयी रचनाओं के सर्जन में श्रीजी की प्रशंसा एवं सम्मान भावना ने नींव की ईंट का काम किया है।

मेवाड़ के यशस्वी शब्द साधक पं. मिश्र को आपने बड़े सम्मान एवं गुरुभाव से सदैव अपने सानिध्य में रखा है। कविता के प्रति आपकी इस सुरुचि सम्पन्न सम्पदा को सम्पूर्ण भारत के कवि समाज ने बड़े आदर भाव से स्वीकारा है। आज के दौर में कवियों का अन्यत्र ऐसा आदर–सम्मान असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। श्रीजी के पास सदैव समयाभाव रहता है। फिर भी पं. नरेन्द्र मिश्र के साथ घण्टों कविता एवं साहित्य पर चर्चा करते उनको देखा गया है।

7. प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम

श्रीजी के निर्देशन–निर्माण में सम्पन्न विगत वर्षों से सिटी पेलेस परिसर में 'यश की धरोहर' नामक 'प्रकाश एवं ध्वनि का कार्यक्रम' प्रदर्शित किया जाता है। जिसमें बापा रावल से वर्तमान तक के मेवाड़ का गौरवपूर्ण इतिहास समाहित है। सम्पूर्ण भारत वर्ष में निजी क्षेत्र में संचालित होने वाला यह एक मात्र पहला प्रदर्शन है जो हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रदर्शित होता है। हिन्दी भाषा में प्रदर्शित होने वाले आयोजन की शैली कविता प्रदान है। दोनों ही विद्याएं अत्यंत ही लोकप्रिय एवं प्रभावी है।

8. पारमार्थिक गतिविधियां :–

श्रीजी हुजूर अत्यन्त ही दयालु स्वभाव एवं उदारमना व्यक्तित्व के धनी हैं। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, महाराणा मेवाड़ मानव धर्म ट्रस्ट, श्री एकलिंगजी ट्रस्ट एवं इसके अंतर्गत संचालित श्री मेवाड़ शिव शक्ति पीठ आदि कई फण्डों, श्री विद्यादान ट्रस्ट, राजमाता गुलाब कुंवरजी चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री चेतक ट्रस्ट, श्री गोवर्द्धन ट्रस्ट आदि कई पारमार्थिक एवं ट्रस्टों के चैयरमैन एवं मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में श्रीजी हुजूर द्वारा अनगिनत पारमार्थिक गतिविधियों का संचालन होता है जिनके माध्यम से प्रतिवर्ष लाखों रूपये विभिन्न जरूरतमंदों को प्रदान किए जाते हैं।

यही नहीं, मेवाड़ के श्री एकलिंगजी ट्रस्ट में मंदिरों में भेंट–भेटावण से जो भी आय होती है उसका एकांश भी मंदिरों की सेवा–पूजा – भोग – मरम्मत – रखरखाव अथवा कर्मचारियों के वेतन पर व्यय नहीं होता। ऐसी समस्त आय का हिसाब अलग से श्री मेवाड़ शिव शक्ति पीठ नामक फण्ड में रखा जाता है तथा इसका शत–प्रतिशत उपयोग पारमार्थिक कार्यों के लिए किया जाता है।

यह श्रीजी हुजूर की दानशीलता एवं समाज के गरीब वर्ग के प्रति सहिष्णुता का ही सुफल है कि शहर के असहाय रोगियों की सेवार्थ महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल डिस्पेंसरी का संचालन फाउण्डेशन द्वारा किया जा रहा है जहां कुशल एवं अनुभवी चिकित्सकों का निःशुल्क परामर्श एवं यथा संभव निःशुल्क औषधियां उपलब्ध कराई जाती हैं। ट्रस्ट के प्रधान कार्यालय पर श्रीजी हुजूर के स्थाई निर्देश हैं कि कोई

भी साधु–संत आवे तो वह खाली हाथ नहीं लौटना चाहिये। प्रतिदिन यहां बड़ी संख्या में साधु–संत आते हैं जिन्हें विविध फण्डों से सदावर्त भेंट किया जाता है।

'अरविन्द' आपने हर मुश्किल बढ़कर आसान बनाई है।
अपने विवेक से दुनियाँ में अपनी पहचान बनाई है।।
जब परिवर्तित परिवेशों में मिट गये अनेकों राजवंश।
तब इस धरती की कीर्ति ध्वजा तुमने सगर्व फहरायी है।।

9. लेखन, पठन–पाठन, चिन्तन :–

श्रीजी हुजूर अध्यव्यसायी और चिन्तनशील व्यक्तित्व के धनी हैं। विशेषतौर पर हिन्दी–अंग्रेजी साहित्य एवं इतिहास तथा संस्कृति की पुस्तकें पढ़ने का आपको बड़ा शौक है। आपकी अध्येतावृत्ति का ही प्रभाव है कि चाहे किसी भी स्तर के विद्वानों की गोष्ठी या सभा हो, आप सब पर छा जाते हैं और सम्बद्ध विषय के बारे में अपने गहन ज्ञान की छाप अवश्य छोड़ते हैं। यही कारण है कि स्थानीय स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की किसी भी प्रकार की संगोष्ठी, सभा अथवा सेमीनार के आयोजक श्रीजी हुजूर को किसी न किसी रूप में अवश्य आमंत्रित कर अपने आपको धन्य एवं गौरवान्वित महसूस करते हैं।

गहन अध्येता होने के साथ ही साथ श्रीजी हुजूर कलम के भी धनी हैं। अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा में आप समान दक्षता के साथ कलम चलाते हैं। अपने सारभूत अध्ययन एवं चिन्तन–मनन को प्रभावशाली तरीके से लिपिबद्ध करने के मामले में श्रीजी हुजूर का कोई सानी नहीं है।

भविष्य का इतिहास श्रीजी हुजूर को एक सकारात्मक एवं रचनात्मक चिन्तक के रूप में निश्चित रूप से याद करेगा क्योंकि श्रीजी हुजूर का चिन्तन जहाँ आकाश की ऊँचाइयों से भी ऊपर और समुद्र की गहराईयों से भी गहरा है वहीं ब्रह्माण्ड की विशालता की भाँति व्यापक और हिमालय की भाँति स्थिर है। संसार में ऐसे चिन्तक विरले ही पैदा होते हैं जिनकी सोच का दायरा **'स्व'** से काफी परे **'सर्व'** पर केन्द्रित है। उनके चिन्तन पर किसी व्यक्ति विशेष अथवा किसी **'वाद'** विशेष की छाप नहीं है। यह नितान्त अपने निजी अनुभवों, अध्ययनों और विचारों का परिणाम है। आपकी चिन्तन प्रक्रिया की समग्रता ने ही आपको हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा का कुशल वक्ता भी बनाया है। वाणी पर आपका जो नियंत्रण है, विचारों का जो निर्बाध प्रवाह है और शब्दों का जो सहज चयन है वह एक अनुपम त्रिवेणी संगम है। सोने पे सुहागा यह कि श्रीजी हुजूर का चिन्तन केवल आत्मालाप नहीं है, यह कर्म में अनुदित होने वाली सहज प्रक्रिया है जिसका परिणाम कई महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं के रूप में सभी के सामने है।

10. खेल प्रेम :–

श्रीजी हुजूर बाल्यकाल से ही खेलों के प्रति समर्पित रहे हैं। आपके पिता स्वर्गीय महाराणा भगवतसिंह जी मेवाड़ ऑफ उदयपुर को प्रदेश एवं मेवाड़ रियासत में बहुप्रचलित पोलो खेल एवं क्रिकेट खेल को लाने का श्रेय प्राप्त है। आप वर्तमान में विलुप्त हो रहे पोलो खेल को संरक्षण एवं बढ़ावा देने की दिशा में कटिबद्ध हैं। इसी क्रम में आपने शिकारबाड़ी में पोलो खेल के लिए घोड़े तैयार करने का उपक्रम **''उदयपुर एक्वाइन इंस्टीट्यूट''** कई वर्षों से शुरू कर रखा है जो पोलो के

नवोदित खिलाड़ियों को भी प्रोत्साहित करने में लगा हुआ है। बचपन से ही आप क्रिकेट एवं पोलो के श्रेष्ठ खिलाड़ी रहे हैं और आज भी इन खेलों के उत्कर्ष के लिए अनवरत प्रयासरत है। आपके सतत् प्रयासों से राजधानी जयपुर के बाहरी छोर पर सभी सुविधायुक्त एक पोलो कॉम्पलेक्स स्थापित हुआ है, जिसे आज विश्व के सभी पोलो खेल प्रेमी **''दी रामगढ़ रिर्सोट्स एण्ड पोलो कॉम्पलेक्स''** के नाम से जानते हैं। यही नहीं, पोलो को लोकप्रिय बनाने के लिए आपने कैम्ब्रिज और न्यूमार्केट पोलो क्लब इंग्लैण्ड में **''उदयपुर कप टूर्नामेंट''** भी प्रायोजित किया था।

श्रीजी हुजूर मेयो कॉलेज अजमेर के विशिष्ट छात्रों में से एक हैं। आप मेयो कॉलेज क्रिकेट टीम के कप्तान ही नहीं, वरन् प्रथम राजस्थान स्कूल क्रिकेट टीम के कप्तान भी रहे। आपकी कप्तानी में खेली गई अखिल भारतीय विद्यालयी स्तर क्रिकेट प्रतियोगिताएं उत्कृष्ट खेल के कारण सदा के लिए गौरवान्वित इतिहास बन गई हैं। आपने राजस्थान के लिए प्रथम दर्जे के क्रिकेट मैचों में भी उम्दा प्रदर्शन किया है।

आपकी खेल विधा के प्रति अत्यधिक रुचि के कारण विभिन्न खेल संगठनों व क्लबों ने आपके मार्ग दशर्न की चाह रखी तो आपने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। वर्तमान में आप राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन, क्रिकेट क्लब ऑफ इण्डिया, द बोम्बे क्रिकेट एसोसिएशन, द बोम्बे जिमखाना, द मेलबॉन क्रिकेट क्लब, लंदन (यू. के.) के सक्रिय सदस्य हैं। आप इण्डियन पोलो एसोसिएशन के संस्थापक सदस्य हैं। आप ''द रॉयल वेस्टर्न इण्डिया टर्फ'' क्लब के भी सदस्य हैं। आपके मार्गदर्शन

व आर्थिक सहयोग से प्रतिवर्ष यहां विभिन्न स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं।

11. सामाजिक सरोकार :

सुप्रसिद्ध लेखक, इयान ऑस्टिन ने अपनी पुस्तक ''मेवाड़ : द वर्ल्ड्स लोंगेस्ट सर्विंग डायनास्टी' में लिखा है कि – ''श्रीजी अरविन्द सिंह मेवाड़ बिना राज्य के राजा हैं लेकिन उनकी दिनचर्या इतनी व्यस्त है जितनी कि उनके पुरखों की भी नहीं थी। वह अपने गौरवशाली भूतकाल को सुनहरे भविष्य में परिवर्तित करने की प्रक्रिया में इतने तल्लीन और सक्रिय हैं कि उनकी प्रत्येक गतिविधि उनके सामाजिक सरोकारों की कहानी कहती है।'' वस्तुतः श्रीजी हुजूर के बारे में अंग्रेजी का यह वाक्य पूरी तरह से अनुकूल है – "Shriji is man-of-the people, for the people. He is driven by a hunger for creativity" (अर्थात् श्रीजी समाज के आदमी हैं और समाज के लिए हैं। हर समय उन्हें कुछ रचनात्मक कार्य करने की लगन लगी रहती है)।

विभिन्न पारमार्थिक एवं ट्रस्टों के चैयरमैन एवं मैनेजिंग ट्रस्टी तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के चैयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर होने के नाते दिन भर उन्हें इन संस्थाओं से सम्बद्ध गतिविधियों के लिए तो समय निकालना ही पड़ता है लेकिन मेवाड़ के गौरवशाली राजवंश के सुयोग्य उत्तराधिकारी एवं मेवाड़ के 76वें महाराणा होने के नाते उन्हें अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन भी करना ही होता है। मेवाड़ आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों से मुलाकात, विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक–शैक्षणिक एवं व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में

भागीदारी निभाना, विभिन्न प्रतिनिधि मण्डलों से औपचारिक मुलाकात के लिए समय निकालना और विभिन्न प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर मेवाड़ का प्रभावपूर्ण प्रतिनिधित्व करना आपके सामाजिक सरोकारों के दायरे में आता है।

'महाराणा मेवाड़' संस्था के सुनिर्धारित सामाजिक दायित्व, जिनका प्रतिपादन गुरू महर्षि हारीत राशि ने आज से 1500 वर्ष पूर्व किया था, आज भी श्रीजी हुजूर के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं। इन्हीं दायित्वों की पूर्ति के लिए श्रीजी हुजूर ने अपने दूरदृष्टा व्यक्तित्व का परिचय देते हुए अपने पिताश्री द्वारा स्थापित सामाजिक संस्थाओं को और अधिक समाजोन्मुख बनाया और उनकी कार्य प्रणाली में सुधार कर उन्हें अधिक उपयोगी स्वरूप प्रदान किया। शिक्षा के क्षेत्र में भी विद्यादान ट्रस्ट द्वारा संचालित महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल एवं महाराणा मेवाड़ विद्या मंदिर आज उदयपुर के ही नहीं, सम्पूर्ण राजस्थान के श्रेष्ठतम विद्यालयों की श्रेणी में आते हैं। शोधार्थियों एवं ज्ञान–जिज्ञासुओं के लिए श्रीजी हुजूर ने अपने निजी संग्रह की समस्त पुस्तकें दान कर महाराणा मेवाड़ विशिष्ट पुस्तकालय की स्थापना की जो भारतवर्ष में अपनी तरह का एक मात्र अनूठा पुस्तकालय है जहाँ विभिन्न विषयों की 30 हजार दुर्लभ पुस्तकें संग्रहीत है। इसी प्रकार महाराणा मेवाड़ अनुसंधान केन्द्र में मेवाड़ राज्य के समय का समस्त दुर्लभ रिकॉर्ड एवं बहियां संग्रहीत कर शोधार्थियों के लिए नया आयाम स्थापित किया गया है।

पर्यावरण संरक्षण का क्षेत्र हो या जल संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण का मुद्दा हो या सांस्कृतिक अपदूषण का, श्रीजी हुजूर ने समाज को नई और प्रभावशाली दिशा प्रदान करने में सदैव पहल की है और समाज के सभी वर्गों ने आदर भाव से

श्रीजी हुजूर की पहल का अनुसरण किया है। श्रीजी हुजूर ने प्रभावशाली तरीके से समाज की सेवा करने के अपने दृढ़ निश्चय के चलते ही सभी प्रकार के प्रलोभनों एवं दबावों के बावजूद राजनीति के क्षेत्र की ओर कभी रुख नहीं किया। श्रीजी हुजूर की स्पष्ट मान्यता है कि राजनीति से परे रह कर भी वह समाज के लिए काफी कुछ कर सकते हैं।

12. गुणों के पारखी :–

मेवाड़ के महाराणा गुणियों का सदा ही सम्मान करते आए हैं और इतिहास इस बात का साक्षी है कि

इसकी गरिमा के वंशज ने पावन स्वधर्म पहचाना है।
गुण की जीवन्त अस्मिता को मन–प्राणों से सम्माना है।

श्रीजी हुजूर ने भी अपनी इस वंश परम्परा को आगे ही बढ़ाया है। श्रीजी हुजूर सही अर्थों में गुण–ग्राहक हैं। उनकी गुण ग्राहकता के दो सबसे अधिक प्रभावशाली उदाहरण हैं – महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन वार्षिक अलंकरण सम्मान और श्रीजी हुजूर द्वारा समय–समय पर अपने मित्रों एवं कर्मचारियों के रूप में गुणवान व्यक्तियों का चयन।

महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन वार्षिक अलंकरण सम्मान की परम्परा सन् 1980–81 में श्रीजी हुजूर के पिताश्री ने आरम्भ की तथा सन् 1983 तक उन्होंने एक राष्ट्रीय स्तर एवं दस राज्य स्तर के अलंकरणों की स्थापना कर दी थी। अपने पिताश्री के देवलोकगमन के पश्चात् श्रीजी हुजूर ने इस परम्परा को न केवल निरन्तरता प्रदान की वरन इसमें एक अन्तर्राष्ट्रीय (कर्नल जेम्स टॉड अलंकरण), तीन राष्ट्रीय (हकीम

खां सूर अलंकरण, महाराणा उदय सिंह अलंकरण एवं पन्नाधाय अलंकरण) और एक राज्य स्तरीय (राणा पूंजा अलंकरण) अलंकरण सम्मान और जोड़ कर इसे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापकता दी और आज इन अलंकरण सम्मानों का स्तर नोबल पुरस्कार के समकक्ष आंका जाता है। इस ख्याति एवं प्रतिष्ठा का एक मात्र कारण श्रीजी हुजूर की गुण–ग्राहकता एवं निष्पक्षता है। अलंकरणों के लिए सुपात्रों के चयन की प्रक्रिया पूर्णतः पारदर्शी एवं निर–क्षिर है जिसमें किसी प्रकार के दबाव, सिफारिश अथवा पक्षपात की कोई संभावना नहीं है। इसलिए जिन व्यक्तित्वों का इन अलंकरणों के लिए चयन होता है वे वस्तुतः इन अलंकरणों के लिए गौरव का विषय बन जाते हैं। वर्ष 2005 में महाराणा मेवाड़ फाण्डेशन अपने अलंकरण सम्मान समारोह की रजत जयंती मना चुका है तो साल दर साल यह सम्मान अपने स्थापित मूल्यों को आगे बढा रहा है।

श्रीजी हुजूर में किसी भी व्यक्ति विशेष के गुणावगुणों को परखने की जन्मजात दक्षता है। गुणीजन उनके प्रश्रय में रह कर सभी प्रकार से उन्नति करते हैं तथा श्रीजी हुजूर उन्हें अपने गुणों से समाज की सेवा करने का समुचित मंच एवं अवसर मुहैया करवाते हैं। गुणीजन समाज में श्रीजी हुजूर की लोकप्रियता का यही एक मात्र महत्वपूर्ण कारण है।

13. अग्रणी व्यवसायी – नवाचारों के जनक :–

भारतीय पर्यटन एवं होटल उद्योग में श्रीजी हुजूर का नाम विविध नवाचारों के प्रणेता के रूप में लिया जाता है। एक अग्रणी होटल व्यवसायी के रूप में श्रीजी

हुजूर ने देश में हेरिटेज टूरिज्म व्यवसाय को एक नई दिशा दे कर लोकप्रियता के शिखर तक पहुँचाया है।

भारतीय पर्यटन एवं होटल उद्योग के क्षेत्र में श्रीजी हुजूर की एक अलग पहचान है। एक अंग्रेज पत्रकार फिलीप स्कॉट के अनुसार – ''आज तमाम कठिनाइयों एवं विषम परिस्थितियों के बावजूद भारत के महान मेवाड़ राजवंश के उत्तराधिकारी अरविन्द सिंह मेवाड़ ने व्यवसाय में सफलता की एक नई कहानी लिखी है, वह एक ऐसे व्यवसायी के रूप में उभर कर आए हैं जिसके बारे में कहा जा सकता है कि वह 'पारम्परिक मूल्यों को मानने वाले आधुनिक व्यवसायी हैं।' अरविन्द सिंह मेवाड़ ने व्यवसाय जगत में अपनी एक अलग शैली विकसित की है और यह सिद्ध किया है कि परिवर्तन केवल पुरानी चीजों को नकार कर ही नहीं लाया जा सकता वरन् पुराने मूल्यों, परम्पराओं और रिवाजों को कायम रखते हुए भी नवाचार लाए जा सकते हैं। भारत में महलों को होटलों में परिवर्तित करने की परम्परा बहुत नई नहीं है, ऐसा कई लोगों ने किया है कि अपने महलों को होटलों में परिवर्तित कर दिया, लेकिन अरविन्द सिंह मेवाड़ ने इसमें नया यह किया कि उन्होंने दूसरों के महलों को खरीद कर उन्हें भी होटलों में परिवर्तित किया और इस प्रकार अपने व्यावसायिक साम्राज्य का सम्पूर्ण राजस्थान में विस्तार किया। इस दृष्टि से देखा जाए तो अरविन्द सिंह मेवाड़ अपने समय का महानतम योद्धा है।''

जब श्रीजी हुजूर ने 1984 में अपने पिताश्री का कारोबार संभाला तब इनके पास केवल तीन होटल थे – शिव निवास, शिकारबाड़ी और लेक पेलेस होटल (जो ताज ग्रुप ऑफ होटल्स को लीज पर दिया हुआ है)। किन्तु श्रीजी हुजूर ने अपनी

मेहनत और जोखिम लेने की क्षमता के बूते पर इस समूह का विस्तार किया और आज उदयपुर में फतह प्रकाश, गार्डन होटल एवं उदयपुर के बाहर जैसलमेर (गोरबंध पेलेस), गजनेर (गजनेर पेलेस), बीकानेर (करणी भवन पेलेस), कुम्भलगढ़ (दी ओदी), राणकपुर (फतेह बाग) को विश्व की बेहतरीन होटलों का दर्जा दिलाया है।

भारतीय पर्यटन एवं होटल उद्योग ने श्रीजी हुजूर के योगदान को समुचित मान्यता देते हुए जहाँ उन्हें राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न सम्मानों से सम्मानित किया वहीं भारत सरकार के पर्यटन विभाग ने शिव निवास और फतह प्रकाश जैसे होटलों को बार–बार ग्रेण्ड हेरिटेज होटल अवार्ड प्रदान कर इनकी उत्कृष्टता को मान्यता दी है।

एच. आर. एच. ग्रुप ऑफ होटल्स, उदयपुर के चैयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में श्रीजी हुजूर ने राजस्थान में हेरिटेज टूरिज्म के संरक्षण एवं संवर्धन में सदैव अग्रणी भूमिका निभाई है। श्रीजी हुजूर प्रायः कहा करते हैं – ''महलों, किलों एवं वन्य–रिजॉर्ट्स के समुचित प्रबंधन के लिए पर्यटन एक सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। पर्यटन के बिना राजसी वैभव के इन प्रतीकों का संरक्षण संभव नहीं है। लेकिन हेरिटेज टूरिज्म का आशय यहीं तक सीमित नहीं है, इसका आशय है इन परिसम्पत्तियों का इनके मूल स्वरूप में रख–रखाव तथा इनसे जुड़े प्राचीन मूल्यों, रीति–रिवाजों आदि का संरक्षण। ऐसा होने पर ही इनका उपयोग सभी के लाभ के लिए हो पाना संभव है।''

हाल ही में टाईम्स ऑफ इंडिया के एक पत्रकार के साथ भेंट वार्ता में श्रीजी हुजूर ने कहा था – **''वर्तमान में विदेशी पर्यटकों के लिए राजस्थान की विरासत एक प्रमुख आकर्षण है। लेकिन कुछ समय पूर्व तक विरासत, पर्यटन उद्योग का एक उपेक्षित भाग था। वस्तुतः ''हेरिटेज टूरिज्म'' का आशय ऐसे होटलों से लगाया जाता था जहाँ पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं हों। लेकिन आज हालात पूरी तरह से बदल चुके हैं, विशेषतौर पर राजस्थान में आज हेरिटेज होटल्स में जो उच्च कोटि की सुविधाएं उपलब्ध हैं वे होटल व्यवसाय के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ हैं। हेरिटेज ने राजस्थान को विशिष्ट दर्जा दिलाया है। हेरिटेज का आशय केवल पुराने महल और हवेलियां ही नहीं है, इसका आशय प्राकृतिक विरासत और सांस्कृतिक विरासत भी है, राजस्थान में इसकी कोई कमी नहीं है।''**

श्रीजी हुजूर के इन उच्च आदर्शों का अनुसरण करते हुए एच.आर.एच. ग्रुप ऑफ होटल्स दिन–दूनी, रात चौगुनी प्रगति कर रहा है। हेरिटेज टूरिज्म के साथ श्रीजी हुजूर ने शाही शादियों की एक नवीन अवधारणा भी भारतीय समाज को दी है। आरंभ में इस अवधारणा को लेकर व्यवसाय जगत में कई आशंकाएं थीं किन्तु श्रीजी हुजूर की मेहनत रंग लाई और समस्त आशंकाएं निर्मूल सिद्ध हुई। आज उदयपुर शाही शादियों के लिए सर्वाधिक पसंदीदा स्थल के रूप में अपनी पहचान बना चुका है।

श्रीजी हुजूर ने अपनी व्यावसायिक दक्षता के झण्डे केवल होटल एवं पर्यटन व्यवसाय में ही नहीं गाडे हैं वरन् डेयरी, इन्फोर्मेशन टेक्नॉलॉजी और संगीत के क्षेत्र में भी श्रीजी हुजूर द्वारा स्थापित कम्पनियां बहुत ही अच्छा व्यवसाय कर रही

हैं। श्रीजी हुजूर के कई भावी व्यावसायिक कदम मेवाड़ में आर्थिक विकास के नए आयाम स्थापित करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

नवाजे गए हैं श्रीजी हूजूरः –

अपने व्यवसायिक एवं गैर–व्यवसायिक उपलब्धियों के कारण श्रीजी हूजूर को म्यूजियम एसोसिएशन ऑफ इंडिया नई दिल्ली, इंडियन एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ कंजर्वेशन ऑफ कल्चरल प्रॉपर्टी नई दिल्ली, कॉमनवेल्थ एसोसिएशन ऑफ म्यूजियम्स कनाडा, इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कल्चर, इंडियन हेरिटेज सिटी नेटवर्क से सदस्यता प्राप्त है। इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर पर अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए श्रीजी हूजूर को द ग्रनेडियर्स एसोसिएशन्स द्वारा वर्ष 2011 में मानद सदस्यता प्रदान की गई है। इसके अलावा इंडियन एसोसिएशन्स ऑफ ट्यूर ऑपरेटर द्वारा वर्ष 2011 में द हॉल ऑफ फेम अवार्ड से नवाजा गया है। गैलीलियों एक्सप्रेस ट्रेवल वर्ल्ड द्वारा वर्ष 2008 में श्रीजी हूजूर को द टाटा एआईजी लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सराहा गया। ट्रेवल एजेंट्स एसोसिएशन्स ऑफ इंडिया द्वारा वर्ष 2001 में अति महत्वपूर्ण अगस्त्य अवार्ड से सम्मानित किया गया। श्रीजी हूजूर राजीव गांधी ट्यूरिज्म डेवलपमेंट मिशन के सलाहकार हैं वहीं आप द राजस्थान फाउण्डेशन के कार्यकारी सदस्य भी हैं। श्रीजी हूजूर जयपुर विरासत फाउण्डेशन के राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं वहीं जयपुर हेरिटेज इंटरनेशनल फेस्टिवल के मानद सदस्य भी रहे हैं। श्रीजी मेवाड़ उदयपुर चेप्टर ऑफ इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कल्चरल हेरिटेज, राजस्थान एसोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका, ताज एसोसिएशन ऑफ आर्ट

कल्चर एण्ड हेरिटेज, मेहर भार्गव फाउण्डेशन लखनऊ के संरक्षक है। इसके अलावा श्रीजी हूजूर उदयपुर स्थित महाराणा प्रताप स्मारक समिति, सरगम कला परिषद, श्रीनाथद्वारा, शीन इंडिया ब्लड बैंक उदयपुर, महाराणा प्रताप म्यूजियम, हल्दीघाटी के मुख्य संरक्षक है तथा विश्व की प्रमुख संस्थान वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर के सदस्य भी हैं।

12. 21 वीं सदी के मेवाड़ के स्वप्नदृष्टा :–

श्रीजी हुजूर ने जब से मेवाड़ के एकलिंग दीवान का पदभार संभाला है उन्होंने अपने आपको समर्पित समाजसेवी एवं कुशल व्यवसायी के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने **'हाऊस ऑफ मेवाड़'** को सदैव 21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में देख कर उसे उसी अनुरूप स्वरूप देने को अपना जीवन लक्ष्य बना लिया। श्रीजी हुजूर का लक्ष्य उदयपुर को एक ऐसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना है जिसकी पहचान केवल उसकी झीलों व महलों से न हो कर उसके समूचे सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक वैभव के बूते पर हो और उसी के कारण यहाँ पर्यटकीय गतिविधियाँ बढ़ें और आम लोगों की आजीविका का अजस्र स्त्रोत बनें। मेवाड़ परिवार अपने समस्त उपलब्ध संसाधनों के साथ इस अभियान को आगे बढ़ाने में प्राण–प्रण से जुटा हुआ है।

इसी क्रम में श्रीजी हुजूर के कुशल मार्गदर्शन में महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन और इसके सहयोगी महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, श्री विद्यादान ट्रस्ट, महाराणा मेवाड़ मानव धर्म ट्रस्ट, राजमाता गुलाब कुंवरजी चेरिटेबल ट्रस्ट आदि विगत कुछ वर्षो में अपने 50 से अधिक अभिनव प्रकल्पों के

साथ इस दिशा में आगे आए हैं। सिटी पैलेस म्यूजियम, मेवाड़ सोलर सेल, महाराणा मेवाड़ विशिष्ट पुस्तकालय, महाराणा मेवाड़ अनुसंधान केन्द्र, शैक्षणिक संस्थाएं, तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र आदि इनमें से कतिपय प्रमुख प्रकल्प हैं जो विभिन्न ट्रस्टों द्वारा संचालित हैं।

21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में श्रीजी हुजूर का सबसे बड़ा प्रकल्प है – 'द सिटी विद इन ए सिटी प्रोजेक्ट'' जिसकी परिकल्पना एवं क्रियान्वयन श्रीजी हुजूर ने सन् 1991 में आरंभ किया। इस प्रोजेक्ट को लेकर श्रीजी हुजूर ने जो स्वप्न देखे, आज 21वीं सदी के प्रवेश द्वार पर वे साकार होते दिखाई दे रहे हैं। श्रीजी हुजूर प्रायः कहा करते हैं – ''द सिटी विद इन ए सिटी प्रोजेक्ट मेरे सपनों का प्रोजेक्ट है और मैं इसको साकार करने के लिए पुरजोर प्रयास कर रहा हूँ।'' श्रीजी हुजूर की मान्यता है कि पर्यटन का उद्देश्य केवल पर्यटकों से पैसा कमाना ही नहीं हैं, पर्यटन का उद्देश्य यह भी है कि पर्यटन स्थल अपने यहां आने वाले पर्यटकों को क्या दे सकता है ? उदाहरण के लिए म्यूजियम, पुस्तकालय, पुरातात्विक महत्व की सामग्री, कला–साहित्य–संस्कृति एवं इतिहास का ज्ञान आदि कई चीजें हैं जो हम एक पर्यटक को दे सकते हैं – देनी चाहिए। वर्ष 2005 में श्रीजी हूजूर ने अपनी एक नवीन सोच के क्रियान्वयन स्वरूप द सिटी विद इन ए सिटी प्रोजेक्ट को ईटरनल मेवाड़ अर्थात् कालजयी मेवाड़ का नाम दिया। इसमें विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक, पारंपरिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण संरक्षण के उत्थान के अलावा शहर में आने वाले पर्यटकों के साथ एक अटूट रिश्ता स्थापित करना है ताकि जो एक बार यहां आए वो बार–बार यहां आए। यह तभी संभव है जब हम

उन्हें प्रत्यक्षतः कुछ दे सकें और उनके मन में अपने प्रति एक आस्था, विश्वास और साख कायम कर सकें।

श्रीजी हुजूर के 21वीं सदी के मेवाड़ में एक घरेलू हवाई पट्टी भी शामिल है जिसका निर्माण उन्होंने शिकारबाड़ी के नजदीक करवाया है। श्रीजी हुजूर के 21वीं सदी के मेवाड़ में प्रदूषण रहित यातायात व्यवस्था का स्वप्न है जिसे साकार करने के लिए मेवाड़ सोलर सेल से सौर ऊर्जा चालित वाहनों के प्रोटोटाईप का निर्माण भी कर लिया है और शीघ्र ही इन्हें और विकसित कर लिया जाने का प्रयास जारी है।

सही अर्थों में श्रीजी हुजूर 21वीं सदी के मेवाड़ के न केवल स्वप्न दृष्टा हैं वरन् अपने स्वप्न को साकार करने की दिशा में एक तपस्वी–मनस्वी की भाँति दिन–रात साधनारत हैं। मेवाड़वासियों की दृढ़ मान्यता है कि मेवाड़ अधिपति परमेश्वराजी महाराज श्री एकलिंगजी अपने इस समर्पित दीवान के स्वप्न को निश्चय ही साकार करेंगे।

पुरानी शान की जिन्दा निशानी कौन रखता है।
प्रतापी आन का आँखों में पानी कौन रखता है।।
फक़्त मेवाड़ का अरविन्द ही अपवान है वरना।
जिसे दुनिया कहे ऐसी कहानी कौन रखता है।।

13. मेवाड़ की शाश्वत परम्पराओं के सच्चे संवाहक :

संक्षेप में कहा जाए तो श्रीजी हुजूर अरविन्द सिंहजी मेवाड़ पुरातन एवं आधुनिकता का एक सुन्दरतम समन्वय हैं। जहाँ गुरू महर्षि हारीत राशि एवं बापा रावल द्वारा

मेवाड़ की स्थापना के समय प्रतिपादित दिशा–निर्देशों एवं परम्पराओं का निर्वहन वे सम्पूर्ण निष्ठा से करते हैं, वही पाश्चात्य शैली के संगीत नृत्य की भी जानकारी रखते हैं। परम्पराओं के निर्वहन में दशहरे से पूर्व अश्व–गज पूजन एवं होली के अवसर पर होलिका दहन समारोह स्थानीय एवं विदेशी सभी नागरिकों के लिए असीम आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। ठेट मेवाड़ी व हिन्दी पर उनका पूर्ण अधिकार है तो अंग्रेजी में भी वे धारा प्रवाह भाषण दे लेते हैं। परमेश्वराजी महाराज श्री एकलिंगनाथ जी के दर्शनों हेतु वे बगलबंदी, दोलंगी धोती एवं पगड़ी में पधारते हैं तो आवश्यकतानुसार आधुनिकतम पाश्चात्य वेषभूषा में रहने से भी उन्हें परहेज नहीं है। प्रत्येक वर्ष सिटी पैलेस ऑर्गेनाइजेशन से भारतीय परम्परानुसार विक्रम संवत के पंचांग के साथ प्रत्येक ईस्वी सन् का केलेण्डर भी प्रकाशित होता है। क्रिकेट, पोलो, हॉकी, फुटबाल, कबड्डी, कुश्ती आदि सभी खेल उनसे प्रोत्साहन पाते हैं। अश्वारोहण का शौक है तो मर्सिडीज कार चलाने व विमान उड़ाने का शौक भी बरकरार है। पुरानी कारों की रैली को उनका संरक्षण प्राप्त है एवं क्लासिक विंटेज कारों का एक बहुत सुंदर संग्रह एवं प्रदर्शन उन्होंने गार्डन होटल उदयपुर में सुनियोजित रूप से किया है। फतह प्रकाश पैलेस के एक भाग में महाराणा सज्जन सिंह जी (1874–1884 ई.) के समय बनवाये गये क्रिस्टल की विभिन्न सामग्रियों का सुन्दर प्रदर्शन किया गया है।

श्रीजी हुजूर मात्र एक व्यक्ति ही नहीं अपने आप में एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था हैं, जिससे अनेक संस्थानों का जन्म एवं पोषण हुआ है । उनमें अपने पिता महाराणा भगवतसिंह जी की व्यावसायिक कार्यकुशलता, पितामह महाराणा

भूपालसिंह जी की उदारता एवं प्रपितामह महाराणा फतहसिंह जी के अदम्य साहस का अद्‌भुत त्रिवेणी संगम है। उनमें अद्‌भुत लगन व कार्यक्षमता है। समय की माँग के अनुसार रात–दिन परिश्रम कर कम्प्यूटर पर कार्य करने की महारत भी श्रीजी हुजूर ने हासिल की है। अपने पूर्व परिचितों, मित्रों, वृहद् परिवार के सदस्यों, राजपरिवार से पीढ़ियों से जुड़े लोगों, विशिष्ट एवं अतिविशिष्ट लोगों के प्रति वे यथा समय अपनी उदारता एवं कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। भव्य स्नेहभोजों का आयोजन वे करते ही रहते हैं ।

अरविन्द एक पर्याय बना माटी का कर्ज़ चुकाने का।
पुरखों से मिली विरासत की गरिमा को अमर बनाने का।।
जिसने सत का सम्मान किया निज कुल का जग में नाम किया।
अरविन्द नाम है मेवाड़ी पगड़ी की शान बढ़ाने का।।

वर्तमान में रहते व्यक्ति का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता, यह एक कटु सत्य है। कारण कि मूल्यांकनकर्ता निष्पक्ष व तटस्थ नहीं हो पाता । इतिहास इसका साक्षी है कि आने वाली पीढ़ियाँ ही किसी व्यक्ति के गुण–दोष का ठीक ढंग से विश्लेषण कर पाई हैं। श्रीजी हुजूर का मूल्यांकन आज जो कुछ भी किया जा रहा हो, आने वाली पीढ़ियाँ यह अवश्य कहेंगी कि वह एक ऐसा विराट व्यक्तित्व था 'जो राजसी वैभव में भी अरविंद (कमल) की तरह रहा, 'सिंह' की तरह पूर्ण स्वाभिमान से जिया और मेवाड़ की गौरवपूर्ण परम्पराओं को अक्षुण्ण ही नहीं रखा अपितु उन्हें आगे बढ़ाया। साथ ही अपनी सूझ–बूझ से उदयपुर, राजस्थान एवं समूचे भारत की तन–मन–धन से सेवा की' और यही तो सही अनुसरण है मेवाड़

के उत्सर्ग एवं बलिदान की परम्परा का एवं साथ ही मेवाड़ के उस आदर्श वाक्य का कि 'जो दृढ़ राखे धर्म को, तिहिं राखे करतार'।

14. उपसंहारः

श्रीजी अरविन्द सिंह मेवाड़ एक अद्भुत एवं आलौकिक व्यक्तित्व और कृतित्व नामक इस अभिलेख के समापन अंश में हम यह स्पष्ट करना चाहेंगे कि श्रीजी के समस्त संकल्प मानवता को गौरवशाली कर उसे सभी प्रकार से समृद्ध कर विजयी बनाना है। उनका उद्देश्य है कि समस्त संसार के शाश्वत मूल्य अविनाशी और अक्षुण्ण हो। मनुजता की सेवा के सभी प्रकल्प बहुआयामी होंगे तभी हम भारतीय मनीषा के वसुधैव कुटुंबकम् के सर्वोच्च आदर्श की प्राप्ति कर सकेंगे।

वास्तु, कला, साहित्य, संगीत, निर्माण, पर्यावरण, पर्यटन, ज्ञान और विज्ञान आदि सभी संभव क्षेत्रों के अधुनत्म प्रकल्पों के अनुशीलन पर बल दिया गया है। प्रतिवर्ष मानव मूल्यों के मानरक्षक मनीषियों के सम्मानार्थ आयोजित किए जाने वाले विश्व स्तर के सम्मान महोत्सव का अंतिम उद्देश्य विश्व भर में मानव महिमा की संपदा को प्रतिष्ठित कर विजयी बनाना ही है।

सूर्यवंशी कर्त्तव्य बोध से प्रेरित हो श्रीजी भारतवर्ष को अपनी जगत गुरू वाली पदवी से पुनः विभूषित करना चाहते हैं। उनका लक्ष्य है कि संसार भर के कला मर्मज्ञ, चिंतक, विचारक एवं गुणीजन मेवाड़ से प्रेरणा ग्रहण कर विश्व भर का कल्याण करे और इस विश्व कल्याण की संकल्पना को मूर्त रूप से प्रदान करने तथा मानवता की विजयी यात्रा में मेवाड़ अपने इस आचार्य बोध से संपन्न विश्व भर का मार्गदर्शक बने।

जिसने कुल की मर्यादा के गौरव की रीत निभायी है।
उस अपराजेय मनीषा के महिमा वाणी में गायी है।।
मानव मस्तक उन्नायन को अर्पित कविता के शब्द सुमन।
इस पुण्य भूमि के कालजयी दृष्टा का शत–शत अभिनन्दन।।

वस्तुतः श्रीजी हुजूर अरविन्द सिंह जी मेवाड़ के विराट व्यक्तित्व को शब्दों में ढाल पाना नितान्त असंभव है। हाँ, उन्हीं के लिखे चन्द शब्दों में उनके विराट व्यक्तित्व के दर्शन हो सकते हैं –

"I believe in the past with my feet in the
present and my mind in the future. It is more
the future – far more than the
present – that concerns me, though, I am
fearful of neither, it is now that I must
attend to the future."

- Quote of Inheritance – 76

विगत दो वर्षों में श्रीजी हूजूर द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए अनेकानेक कार्यों में से कुछ का संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है–

वर्ष 2009–10

1. एयरपोर्ट पर प्रताप की प्रतापी प्रतिमा :

मेवाड़ के 76वें वंशधर श्रीजी अरविन्द सिंह जी मेवाड़ की चिर अभिलाषा रही थी कि उदयपुर के महाराणा प्रताप हवाई अड्डे डबोक पर स्वतंत्रता और स्वाभिमान के पर्याय कालजयी महाराणा प्रताप की एक भव्य प्रतिमा स्थापित की जाए। श्रीजी अरविंद सिंह जी मेवाड़ ने इस दिशा में भारत सरकार से समन्वय कर कार्य आरंभ किया। श्रीजी की संस्था महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर एवं एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर के निजी सहयोग से यह कार्य संपन्न हुआ। महाराणा प्रताप हवाई अड्डा डबोक उदयपुर के परिसर के मध्य में बने प्रताप प्रांगण के मध्य गनमेटल से बनी 14 फीट लंबी 5 फीट चौड़ी तथा 15 फीट ऊंची इस मूर्ति को 16 फीट लंबे, 6 फीट चौड़े तथा साढ़े 9 फीट ऊंचे आधार पर स्थापित किया गया। तीन टन वजनी इस मूर्ति के निर्माण में लगभग एक वर्ष लगा। श्रीजी हूजूर अरविंद सिंह मेवाड़ का सपना उस समय साकार हुआ जब प्रतापी प्रतिमा का लोकार्पण करने महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमती प्रतिभा पाटील हवाई अड्डे पहुंची। लोकार्पण समारोह में राष्ट्रपति महोदया ने कहा कि युवा शक्ति के लिए प्रताप प्रेरणा के स्त्रोत है। समारोह में राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, केन्द्रीय ग्रामीण एवं पंचायती राय मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी, भारतीय विमान पात्तिकरण के अध्यक्ष वी.पी. अग्रवाल, राय ऊर्जा एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. जितेन्द्र

सिंह, पंचायती राय मंत्री डॉ. भरत सिंह, चित्तौड़गढ़ की सांसद डॉ. गिरजा व्यास, उदयपुर के सांसद रघुवीर सिंह मीणा, राष्ट्रपति महोदया के पति श्री देवी सिंह जी शेखावत उपस्थित थे।

2. जनसहभागिता से झीलों की जय होः

उदयपुर की झीलों एवं उनके जलग्रहण क्षेत्र के संरक्षण के लिए साबरमती बेसिन के अधिशेष जल को उदयपुर की झीलों में पहुंचाना अति आवश्यक है। सिटी पैलेस के दरबार हॉल में 12 अगस्त 2009 को इंटीग्रेटेड लेक बेसिन मैनेजमेंट पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में जनप्रतिनिधियों, वैज्ञानिकों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, उद्यमियों ने एक स्वर में देवास योजना की शीघ्र क्रियान्विति पर जोर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीजी अरविन्द सिंह मेवाड़ ने इस बात पर खुशी जताई कि दोनों राजनीतिक दल, दलगत राजनीतिक विचारधारा से ऊपर उठकर उदयपुर के भविष्य के लिए चिंतित है। उन्होंने कहा कि सब मिलकर काम करें और झीलों की जय हो। इंटरनेशनल लेक एनवायरमेंट कमेटी फाउण्डेशन (आइलेक) जापान, महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर, झील संरक्षण समिति, डॉ. मोहनसिंह मेहता मेमोरियल ट्रस्ट तथा इण्डियन ऐसोसिएशन ऑफ एक्वेटिक बायोलोजिस्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यशाला में आइलेक के अध्यक्ष प्रो. मासाहिसा नाकामुरा ने कहा कि समग्र झील बेसिन प्रबंधन के सिद्धांत के आधार पर ही झीलों का संरक्षण किया जा सकता है। कार्यशाला के मुख्य अतिथि सांसद रघुवीर सिंह मीणा तथा विशिष्ट अतिथि विधायक गुलाबचन्द कटारिया थे।

3. उदयपुर विश्व का नंबर वन शहर :

विश्व पर्यटन मानचित्र पर झीलों की नगरी उदयपुर ने नंबर एक स्थान पर रहकर पर्यटन शिखर पर परचम लहराया है। वर्ष 2009 में न्यूयॉर्क में आयोजित इंटरनेशनल ट्रेवल्स शो में जानी मानी पत्रिका ट्रेवल एण्ड लेजर ने उपरोक्त सर्वे का खुलासा किया है। इस सर्वे में कुल 20 शहरों की वरीयता सूची में भारत का उदयपुर शहर जहां पहले स्थान पर आया है वहीं जयपुर ने 12वें स्थान पर अपनी पहचान बनाई है। हमेशा अग्रणी दस शहरों में अपना स्थान बनाने वाला आस्ट्रेलिया का सिडनी शहर इस बार 11वें स्थान पर आया है। एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर के चेयरमेन अरविन्द सिंह मेवाड़ ने समस्त मेवाड़वासियों तथा पर्यटन व्यवसाय से जुड़े सभी सुधीजनों को हार्दिक बधाई दी।

राष्ट्रपति ने दी उदयपुरवासियों को बधाई : महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने एक अति महत्वपूर्ण सर्वे में उदयपुर शहर विश्व में नंबर वन सिटी के स्थान पर नवाजे जाने पर एक पत्र में उदयपुर की जनता को हार्दिक बधाई दी है। राष्ट्रपति महोदया के एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर के चेयरमेन श्री अरविन्द सिंह मेवाड़ को भेजे हस्ताक्षरयुक्त पत्र में इस बात का उल्लेख किया।

4. एयरपोर्ट पर पहली निजी कंपनी का हैंगर शुरू :

स्थानीय दी लेक पेलेस होटल्स एण्ड मोटल्स प्राइवेट लिमिटेड, सिटी पैलेस उदयपुर द्वारा महाराणा प्रताप हवाई अड्डा, डबोक उदयपुर पर बनाए पहले निजी हैंगर का उद्घाटन 2 दिसंबर 2009 को एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के लक्ष्यराज

सिंह मेवाड़ ने किया। इस हैंगर की लंबाई–चौड़ाई ग्यारह हजार स्क्वायर फीट है तथा ऊंचाई करीब 25 फीट है। अंतर्राष्ट्रीय मापदण्ड के मुताबिक बने इस हैंगर को मुख्य रनवे से 210 मीटर के नवनिर्मित टैक्सी–वे से जोड़ा गया है।

5. पैलेस में फिर से गूंजी घड़ियाल की छतरी :

यहां पैलेस प्रांगण में बड़ी पोल के किनारे बनी ऐतिहासिक घड़ियाल की छतरी का जीर्णोद्धार पश्चात छतरी के गुंबज पर 12 नवंबर 2009 को कलश स्थापना हुई। इसके साथ ही छतरी में जल घड़ी के मुताबिक हर एक प्रहर पर विशाल घंटी बजना शुरू हो गई। महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविंद सिंह जी मेवाड़ ने सन् 2007 में इसके जिर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ करवाया था। घड़ियाल की छतरी के जीर्णोद्धार में उसके मूल स्वरूप को बनाए रखने का शत प्रतिशन ध्यान रखा गया है।

6 शतायु हुआ फतहप्रकाश :

विश्व प्रसिद्ध पीछोला झील किनारे बने एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर का द फतहप्रकाश पैलेस होटल 3 नवंबर 2009 को सौ वर्ष का हुआ। फतहप्रकाश पैलेस होटल के शतायु वर्ष समारोह के अवसर पर पैलेस को रोशनी से सजाया गया। इतिहास के मुताबिक रियासतकालीन समय में मेवाड़ के पूर्व महाराणा फतहसिंह जी अप्रेल 1909 में हरिद्वार पधारे। उन्होंने वहां उनके मित्र लॉर्ड मिंटो को उदयपुर आने का न्यौता दिया। इस पर लॉर्ड मिंटो जब उदयपुर आए तो उन्होंने उदयपुर पैलेस में महाराणा फतहसिंह जी के लिए एक विशाल भवन के नहीं होने का अफसोस जताया। इस पर महाराणा फतहसिंह ने उन्हें इस कार्य के

लिए प्रेरित किया। 3 नवंबर 1909 को ऐतिहासिक फतहप्रकाश पैलेस के दरबार हॉल की नींव रखी गई और जिसका नाम रखा गया मिंटो दरबार हॉल। कुछ पच्चीस वर्षों से यादा समय तक इसका निर्माण जारी रहा। बाद में महाराणा भगवतसिंह जी ने इस भव्य इमारत का नाम फतहप्रकाश पैलेस रखा। वर्तमान में फतहप्रकाश पैलेस में दरबार हॉल एवं क्रिस्टल आर्ट गैलरी का बेजोड़ संग्रह है।

7. सौ साल का इतिहास जीवित है भगवत प्रकाश गैलेरी में :

सिटी पैलेस म्यूजियम की दी भगवत प्रकाश गैलेरी में 30 अप्रेल 2009 से मेवाड़ घराने से संबंधित सौ चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी का नाम 'दी कैमरा एट उदयपुर, 1857–1957' दिया गया है। जिसमें मेवाड़ के महाराणाओं के विभिन्न ऐतिहासिक उत्सवों व कार्यक्रमों के फोटो हैं। दी भगवत प्रकाश गैलेरी, 1 मई 2009 से आम दर्शकों के लिए खोल दी गई है। प्रदशर्नी में सजे चित्रों को पैलेस ऑर्गेनाइजेशन के मीडिया डिपार्टमेंट तथा पैलेस संग्रहालय के सहयोग से प्राप्त किया गया है। पैलेस में कुल 14 हजार फोटोओं के संग्रह में से चुनिन्दा सौ फोटोओं को इस प्रदर्शनी में संजोया गया है।

8. देवास को मिली नई आस :

उदयपुर की झीलों एवं जल संसाधन के लिए कार्य कर रही देवास द्वितीय योजना के संचालन के लिए देवास योजना क्रियान्वयन एवं समन्वयन समिति के अध्यक्ष श्रीजी अरविंद सिंह मेवाड़ के नेतृत्व में समिति के पदाधिकारियों ने 24 सितम्बर 2009 को जयपुर में माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से भेंट कर उनको इस

योजना की जानकारी दी। इसका नतीजा रहा कि राय सरकार ने योजना के लिए दो भागों में नौ करोड़ एवं साढ़े चार करोड रूपए की राशि क्रमशः जारी की।

9. प्रकृति साधना केन्द्र :

19 अगस्त 2009 को श्रीजी अरविंद सिंह मेवाड़ ने स्थानीय विद्या भवन परिसर में प्रकृति साधना केन्द्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उनके साथ मौजूद थे डॉ. राजेन्द्र कुमार पचौरी। श्री पचौरी टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टीट्यूट नई दिल्ली में डायरेक्टर जनरल है।

10. शिव निवास पैलेस होटल को मिला सर्वश्रेष्ठ हेरिटेज

ग्रांड कैटेगरी अवार्ड :

भारत सरकार के केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय ने एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स की एक इकाई उदयपुर स्थित होटल शिव निवास पैलेस को राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार 2007–08 में सर्वश्रेष्ठ हेरिटेज ग्रांड कैटेगरी से नवाज़ा है। वहीं एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स की एक अन्य इकाई गजनेर (बीकानेर) स्थित होटल गजनेर पैलेस को श्रेष्ठ हेरिटेज कैटेगरी से नवाजा है। 25 फरवरी 2009 को नई दिल्ली के अशोका होटल में आयोजित भव्य समारोह में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री पी. चिदंबरम के हाथों दोनों होटलों के अवार्ड एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स की संयुक्त प्रबंध निदेशक पद्मजा कुमारी मेवाड़ ने ग्रहण किए। एचआरएच ग्रुप हमेशा अतिथ देवो भवः के मूल मंत्र से अतिथियों की सेवा करता है साथ ही होटलों के पुरातत्व संरक्षण को बनाए रखने का हरसंभव प्रयास करता है साथ ही एचआरएच ग्रुप द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण रोकथाम के नियमों की पूर्णतया पालना की

जाती है। शिवनिवास पैलेस होटल तथा गजनेर पैलेस होटल की अनेकों खूबियों में एक खूबी उनके व्यवसाय के साथ गौरवशाली परंपराओं को कायम रखना भी शामिल है। समारोह में राजस्थान की पर्यटन मंत्री बीना काक, केन्द्रीय पर्यटन मंत्री अंबिका सोनी, केन्द्रीय पर्यटन राय मंत्री कांति सिंह, पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार के एडीशनल डायरेक्टर जनरल संजय कोठारी, डेप्युटि डायरेक्टर जनरल ट्यूरिम ए. जावेद, पर्यटन मंत्रालय के सेक्रेटरी श्री बेनर्जी, ताज ग्रुप ऑफ होटल के प्रबंध निदेशक रेमंड बिकसन तथा ओबेराय ट्राइडेंट के संयुक्त प्रबंध निदेशक विक्रम ओबेराय भी उपस्थित थे।

11. सीनियर सिटीजन होम का शिलान्यास :

महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविंद सिंह जी मेवाड़ ने सितम्बर 2009 में नेशनल पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट बीकानेर द्वारा प्रस्तावित सीनियर सिटीजन होम गजनेर बीकानेर का शिलान्यास किया। वृद्धजनों के सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में कार्य करने वाली इस संस्था को महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर ने आर्थिक सहयोग दिया।

वर्ष 2010–11

1. पाक कला के कद्रदानः

स्टार प्लस पर गत 27 नवंबर को प्रसारित कार्यक्रम मास्टर शेफ इण्डिया के 12वें एपिसोड रॉयल चैलेंज के जज थे श्रीजी अरविंद सिंह मेवाड़। इस कार्यक्रम को बनानी वाली कंपनी ने गत 16 अक्टूबर को श्रीजी हूजूर की अनुमति के उपरांत उदयपुर पैलेस में शाही अंदाज में शूटिंग की। श्रीजी ने कार्यक्रम के मुख्य एंकर अभिनेता अक्षय कुमार का गर्मजोशी से स्वागत किया तथा कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले नौ प्रतिभागियों का भोजन भी चखा। शाही अंदाज में लवाजमे के साथ पेश किए गए भोजन एवं उस पर श्रीजी हूजूर की टिप्पणी पाक कला प्रेमियों को ही नहीं अपितु दर्शकों के मन में भी घर कर गई।

2. अमेरिकी राजदूत हुए गदगद :

भारत में नियुक्त अमेरिकी राजदूत टिमोइ जे रोमर सपरिवार एक निजी यात्रा पर 22 दिसंबर 2009 को उदयपुर पहुंचे। उन्होंने यहां ऐतिहासिक सिटी पैलेस म्यूजियम तथा द फतहप्रकाश पैलेस होटल में क्रिस्टल आर्ट गैलरी का अवलोकन किया। श्रीरोमर ने सिटी पैलेस के विरासत संरक्षण एवं संरक्षण की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने माणक चौक में कांच की नायाब कारीगिरी की प्रशंसा की तथा सिटी पैलेस की विजिटर्स बुक में सिटी पैलेस को वंडर ऑफ दी वर्ल्ड लिखा।

3. म्यूनिक में सराहया गया मेवाड़ का संग्रह :

11 फरवरी से 24 मई तक जर्मनी के म्यूनिक शहर में आयोजित हिंदुस्तान के पूर्व महाराजाओं के बेजोड़ संग्रहों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी में अठारवीं सदी से लेकर 1947 तक में बनाई गई बेजोड़ कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया। हिंदुस्तान के पूर्व शाही घरानों द्वारा लाई गई इन सामग्रियों में से मेवाड़ घराने की सामग्री सर्वाधिक थी। विक्टोरिया एण्ड अल्बर्ट म्यूजियम लंदन के तत्वावधान में आयोजित इस प्रदर्शनी में मेवाड़ के अरविंद सिंह मेवाड़ एवं उनकी पुत्री भार्गवी कुमारी मेवाड़ ने शिरकत की। इससे पूर्व मेवाड़ की बेजोड़ कलाकृतियां लंदन स्थित विक्टोरिया एवं अल्बर्ट म्यूजियम में आयोजित प्रदशर्नी में अव्वल रही। यह प्रदशर्नी 10 अक्टूबर 2009 से 17 जनवरी 2010 तक चली।

4. फतहप्रकाश पैलेस होटल को सर्वश्रेष्ठ हेरिटेज ग्रांड कैटेगरी अवार्ड :

भारत सरकार के केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय ने एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स की एक इकाई उदयपुर स्थित शतायु हुए होटल फतहप्रकाश पैलेस को राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार 2008–09 में सर्वश्रेष्ठ हेरिटेज ग्रांड कैटेगरी से नवाजा है। मार्च माह में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह में उपराष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी ने एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के जनरल मैनेजर ग्रुप ऑपरेशन्स आदित्यवीर सिंह को इस पुरस्कार से सम्मानित किया।

5. सर गुलाम नून एवं लुकास नवाजे गए :

उदयपुर में 7 मार्च को महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा आयोजित किए गए महाराणा मेवाड़ वार्षिक अलंकरण समारोह में ब्रिटिश मूल के

सर गुलाम नून एवं सर कॉलिन लुकास को कर्नल जेम्स टॉड अलंकरण से नवाजा गया। इन दोनों ने ब्रिटिश लाइब्रेरी में महाकाव्य रामायण पर आधारित सचित्र पांडुलिपि संग्रह को प्रदर्शशित करने का बीड़ा उठाया। ब्रिटिश लाइब्रेरी की इस प्रदर्शनी में अपने लक्ष्य से 17 प्रतिशत अधिक आगंतुकों का प्रवेश हुआ जो वहां का अब तक का सबसे बड़ा रिकॉर्ड है।

6. आयड़ नदी सुधार के प्रयोग सराहनीय :

महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन के तत्वावधान में आयड़ नदी के सुधार हेतु गत 22 मई 2010 को स्थानीय दरबार हॉल में सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार में केन्द्रीय योजना आयोग के सदस्य, प्रधानमंत्री के सलाहकार तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. के.कस्तूरीरंगन ने कहा कि पूरे देश में सीवरेज, गंदगी के कारण एवं उचित जल प्रबंधन नहीं होने सेजल स्त्रोतों का प्रदूषण हो रहा है। नागरिकों की सहभागिता, स्थानीय पहल तथा बायो तकनीकी के संयोजन से जल स्त्रोतों, झीलों, नदियों का प्रदूषण रोका जा सकता है। इस अवसर पर महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन के मुख्य न्यासी अरविंद सिंह मेवाड़ ने कहा कि जनचेतना व जनजागृति से ही झीलों और नदी का प्रभावी व दूरगामी सुधार, संरक्षण संभव होगा।

7. विदेश में फोटो प्रदर्शनी :

सौ वर्ष पूर्व मेवाड़ में खिंची गई बेजोड़ फोटोग्राफी के कुछ नमूने लेकर श्रीजी हूजूर अरविंद सिंह मेवाड़ स्विटजरलैंड के विन्टरथूर्र शहर पहुंचे। 11 जून 2010 को यूरिक फोटो म्यूजियम के श्री उर्स सहेल द्वारा आयोजित फोटोग्राफी प्रदर्शनी

में भारत–पाकिस्तान और बांग्लादेश के प्रमुख फोटोग्राफरों द्वारा खींची गई फोटोओं को प्रदर्शित किया गया था।

8. प्रसिद्ध कार इंजीनियर ग्राह्म एस्ले कार्टर का दौरा :

जुलाई 2010 में लंदन के सुविख्यात कार मैकेनिक ग्राह्म एस्ले कार्टर ने पैलेस गैराज के विंटेज एण्ड क्लासिक कार कलेक्शन की एक अहम कार रॉल्स रॉयस फैंटम द्वितीय चैसिस नंबर आरवाई 181 की मरम्मत की। कार्टर पिछले पचास वर्षों से रॉल्स रॉयस कार की देखभाल में माहिर है। अपने उदयपुर प्रवास के दौरान कार्टर ने पैलेस गैराज की एक और अद्वितीय कार रॉल्स रॉयस 20 एचपी चैसिस नंबर जीएलके 21 का भी रखरखाव किया।

9. मोती चौक :

सातानवारी पायगा एवं खासा रसोड़ा से घिरे हुए मोती चौक का निर्माण महाराणा श्री कर्ण सिंह जी के शासनकाल में सोलहवीं शताब्दी में करवाया गया था। इस चौक का मेवाड़ परिवार द्वारा आगमन एवं प्रस्थान स्थल के रूप में प्रयोग किया जाता था और यहीं पर हाथी और घोड़ों को शाही दौरों एवं जुलूसों के लिए तैयार किया जाता था। वर्ष 2010 में श्रीजी हूजूर अरविंद सिंह जी की बहुआयामी सोच एवं निर्देशन में फाउण्डेशन ने इसके वास्तुशिल्प को बगैर छेड़छाड़ किए पर्यटकों के विश्राम हेतु पत्थरों की बैंच एवं शेल्टर का निर्माण करवाया।

10. विंटेज कार रैली:

पर्यटन को बढ़ावा देने के मुख्य उददेश्य से श्रीजी अरविंद सिंह मेवाड़ ने 25 अक्टूबर 2010 को आयोजित विंटेज कार रैली रॉल्स रॉयस रॉयल टूर ऑफ राजस्थान की अगुवाई की। श्रीजी अपने विंटेज एण्ड क्लासिक कार कलेक्शन गार्डन होटल उदयपुर से 1934 में निर्मित रॉल्स रॉलस फैंटम कार लेकर डूंगरपुर पहुंचे। इस रैली में अनेकों विटेंज कार ने भाग लिया। डूंगरपुर में रैली का स्वागत महारावल महिपाल सिंह जी डूंगरपुर ने किया।

11. चित्रशाली :

स्थानीय सिटी पैलेस म्यूजियम के जनाना महल में अक्टूबर 2010 में एक नई गैलेरी चित्रशाली प्रारंभ की गई। इस गैलेरी में चित्रकारों की बैठक व्यवस्था के अलावा उनके द्वारा उपयोग में ली जाने वाली सामग्री एवं तकनीक दर्शायी गई है साथ ही चित्रांकन की पारंपरिक तकनीक मेवाड़ी शब्दावली के साथ प्रदर्शित की गई है। इस गैलेरी में मेवाड़ शैली की चित्रकला के महत्वपूर्ण चित्रकारों एवं संरक्षकों की एक सूची भी प्रदर्शित की गई है।

12. नीली रोशनी में नहाया पैलेस:

विश्व मधुमेह दिवस के उपलक्ष में 14 नवंबर 2010 को मधुमेह जैसे गंभीर रोग के प्रति लोगों को सजग करने के उद्देश्य से महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन द्वारा स्थानीय सिटी पैलेस म्यूजियम एवं जनाना महल को दो दिनों तक नीली रोशनी से सजाया गया। फाउण्डेशन का उद्देश्य था कि डायबिटिज रोकथाम के

प्रतीक नीली रोशनी को देखकर नागरिक एवं पर्यटक इस रोग के प्रति सजग रहेंगे तथा आवश्यक चिकित्सा एवं परामर्श लेंगे।

13. पधारे मॉरीशस के राष्ट्रपति :

मॉरीशस के राष्ट्रपति अनिरूद्ध जगन्नाथ एवं उनकी पत्नी सरोजनी जगन्नाथ ने 24 नवंबर को उदयपुर प्रवास के दौरान ऐतिहासिक सिटी पैलेस का भ्रमण किया। पिछोला झील किनारे स्थित सिटी पैलेस के झरोखों से शहर के विहंगम दृश्य को देखकर वे अभिभूत हुए। वे फतह प्रकाश महल स्थित दरबार हॉल में पधारे जहां उन्होंने फाउण्डेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ से मुलाकात की तथा मेवाड़ के स्थापत्य कला, धरोहर संरक्षण एवं पर्यटन विकास जैसे संजीदा मुद्दों पर चर्चा की।

वर्ष 2011–12

1. तीन सौ वर्ष पूर्व के त्रिपोलिया ने लिया और भव्य रूप :

शहर के ऐतिहासिक पैलेस में 300 वर्ष पूर्व बने भव्य त्रिपोलिया द्वार का हाल ही में जीर्णोद्धार कर उसमें लाखों रूपए से बने विशाल लकड़ी के किवाड़ लगाए गए हैं। महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर के इस कार्य के बाद पैलेस के इस विलक्षण प्रवेश द्वार को ना केवल संवर्द्धन, संरक्षण मिला है अपितु आने वाले कई वर्षों तक इसका भव्य रूप पर्यटकों को लुभाता रहेगा।

मेवाड़ वंश के राणा उदयसिंह द्वितीय जो कि राणा प्रताप के पिता थे, ने 1559 ई. में पैलेस की नींव रखी थी। इसके पश्चात राणा संग्राम सिंह द्वितीय ने 1711 ई. में त्रिपोलिया का निर्माण करवाया था। इतिहासविदों के मत के अनुसार त्रिपोलिया स्वतंत्र राय का प्रतीक है। मुगल काल में इनका निर्माण वर्जित था परंतु राणा संग्राम सिंह ने मेवाड़ की संप्रभुता एवं स्वतंत्रता के रूप में इसका निर्माण करवाया था। इन तीन धनुषाकार द्वार के लिए राजसमंद से सफेद संगमरमर मंगवाया गया था। वर्षों पुराने त्रिपोलिया में पहले लकड़ी के किवाड़ नहीं थे। इन द्वारों पर सशस्त्र प्रहरी आठों प्रहर तैनात रहते थे। त्रिपोलिया का बीच का द्वार केवल राणा के आने–जाने के लिए सुरक्षित रहता था। जबकि अन्य दोनों तरफ के द्वारों से आमजन की आवाजाही होती थी। 1842 ई. में महाराणा स्वरूपसिंह जी ने इस त्रिपोलिया के ऊपर हवामहल का निर्माण करवाया, जिसका वर्ष 2005 में श्रीजी अरविंद सिंह मेवाड़ ने पुर्णोद्धार करवाया।

महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन ने त्रिपोलिया को नया स्वरूप प्रदान करने के लिए इसके बीच के द्वार में बर्मा सागवान की लकड़ी से 20 फीट लंबे एवं 13 फीट चौड़े तथा दोनों तरफ के अन्य दो किवाड़ जो कि 20 फीट ऊंचे एवं 12 फीट चौड़े हैं। इन किवाड़ों पर पीतल के मोगरे एवं अंकुश जड़े हैं। लकड़ी, लोहे एवं पीतल से निर्मित लगभग 4000 किलो के इन किवाड़ों को भारी मात्रा में अलसी का तेल पिलाया गया।

2. स्ट्रॉसबर्ग म्यूनिसिपल एवं उदयपुर के मध्य हुए करार पर हस्ताक्षर

फ्रांस के शहर स्ट्रॉसबर्ग की यातायात, ऐतिहासिक धरोहर के रखरखाव एवं जल निकासी की बेहतरीन कार्यप्रणाली शीघ्र ही उदयपुर में भी मूर्त रूप लेगी। इस दायित्व के निर्वहन के लिए स्ट्रॉसबर्ग में दोनों इकाईयों के बीच हुए समझौते पर हस्ताक्षर के बाद महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्द सिंह मेवाड़ द्वारा वर्ष 2006 में देखी गई दूरगामी सोच से उदयपुर के विकास में नया मोड़ स्थापित होगा। स्ट्रॉसबर्ग के होटल डीविले में 2 अक्टूबर 2011 को श्रीजी हूजूर के प्रतिनिधि ने समझौते पर हस्ताक्षर किए।

जब तक जीवित है वसुंधरा जब तक गंगा में पानी है।
इस भरत भूमि की धरती पर जब तक कविता की वाणी है।।
तब तक मेवाड़ी धरती की गाथा दुहराई जाएगी।
इस पुण्य भूमि के गौरव की अविनाशी अमिट निशानी है।। (पं. नरेन्द्र मिश्र)

परिपूर्ण : दिनांक 11.11.2011

संकलन
श्रीजी राजभाषा सचिवालय, सिटी पैलेस,
उदयपुर–313 001
राजस्थान (भारत)
फोन– +91–294 2419021–9, फैक्स–2419020
वेबसाईट–www.eternalmewar.in

सूर्यवंशी कर्तव्यबोध के अनन्य साधन
प्राचीन विरासत, कला, संस्कृति एवं साहित्य के अप्रतिम संवाहक

.....

श्रीएकलिंगनाथ जी
के दीवान के रूप में मेवाड़ को समर्पित
श्रीजी हुजूर अरविन्द सिंह मेवाड़
ऑफ उदयपुर
का महान व्यक्तित्व

.....